480 (P)
H (09)

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1528/1071

आह्वानांक Call No. ______
अवाप्ति सं० Acc. No. 480

No 13

* ॐ *

* खून का आँसू *

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
29 FEB. 1932
No ....

Khun ka Ansoo

प्रकाशक--

रामचन्द्र चन्द्रदेव

टावर रोड, (गया)

सर्वाधिकार स्वरक्षित है।

प्रथमबार २००० | १९३१ | मूल्य -)

891.431
C361K

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 480
Date 10.12.71
GOVT. OF INDIA

खून का आँसू

गाना नं० १

कहैं रामजी आँसू बहाई। हाय बिछुड़ा हमारा प्यारा भाई॥ टेक॥ किस सायत से निकले घर से, सिय खोई भाई को तरसे, कहो कैसो ये विपदा आई॥ १॥ हाय बिछुड़ा प्यारा मेरा भाई॥ भाई लखन उठो अब जागो, पड़ी नाव भँवर में न त्यागो, क्या कहूँगा जो पूछे माई॥ २॥ यदि यह मुझे मालूम होता, दुख सिन्धु देगा मुझे गोता, तो आता न बन में लिवाई॥ ३॥ उठ बैठो कहाँ तज के जाते, मिलो कण्ठ से भाई के नाते, अपनी भुजा देव फैलाई॥ ४॥ कहैं रामजी आँसू बहाई। हाय बिछुड़ा मेरा प्यारा भाई॥

गजल नम्बर २

"दिवाने मजनू की पुकार"

लयला लयला पुकारूँ मैं बन में ।
लयला प्यारी बसी मेरे मन में ॥ लयला० ॥
जिसके फुरकत में हूँ मैं दिवाना ।
उसके पत्ते का कोई नहीं ठिकाना ॥१॥
प्यारे किस जाँ छुपी मेरी प्यारी ।
मेरे दिलपर मुसीबत है भारी ॥२॥
लैला प्यारी की कुछ भी खबर है ।
जिसकी फुरकत में दर्दे जिगर है ॥३॥
पास अपने बुला ले खुदारा ।
वरना बेहतर है मरना हमारा ॥४॥
लैला प्यारी से यों जाय कहियो ।
तेरा आशिक फिरे है दिवाना ॥५॥
जब तक होगा तेरा इन्तजारा ।
शायद दम भी न निकले हमारा ॥६॥
लैला प्यारी को किस जां मैं पाऊँ ।
जोगी बनके मैं ढूँढन जाऊँ ॥ ७ ॥ लैला० ॥

गजल नम्बर ३

दिन खून के हमारे प्यारे न भूल जाना ।
खुशियों में अपनो हम पै आँसू बहाते जाना ॥

शैय्याद ने हमारे चुन चुन के फूल तोड़े।
वीरान इस चमन में अब गुल खिलाते जाना।
फांसी पै चढ़ रहे हैं कर करके नाश उनका।
सूनी पड़ी कबर पै दीया जलाते जाना।
कहते हैं दिल थामकर वह मेरे मर जाने के बाद।
होगा क्या दीवाना कोई ऐसे दीवाने के बाद।
अब चलायें आप शमशीर शितम अच्छी तरह।
हम किये लेते हैं गर्दन अपनी खम अच्छी तरह।
वह भी वाकिफ हो गये दुनिया भी वाकिफ होगई।
खुल गये मेरी मुहब्बत के भरम अच्छी तरह।
कुछ कैद में पड़े हैं हम कब्र में पड़े हैं।
दो बुन्द आँसु इन पर एक दिन बहाते जाना।

गजल नं० ४

थेटर का गाया हुआ।

किस किस अदा से तूने, सूली चढ़ा के मारा।
आजाद हो चुके थे, बन्दा बना के मारा ॥ १ ॥
मुझको बना के पुतला, पुतले में जान डाली।
जालिम बुला कजा को, मुरत बना के मारा ॥ २ ॥
बुलबुल चमनमें चहका, गुलसन में आके महका।
दुनियां रुला के मारा हमको हँसा के मारा ॥ ३ ॥

नजरों में तेरे जालिम कांटे सा चुभ रहा था।
देखा जिधर को तू ने, खूनी बना के मारा ॥ ४ ॥

गजल नं० ५

मुर्ग दिल मत रो यहां आंसू बहाना है मना।
इस चमन में बुलबुलों को फड़फड़ाना है मना ॥
हाय बेदादी तो देखो कहता है सैय्याद भी।
इस कफस के कैदियों को गुल मचाना है मना ॥
मेरे रंग से हाथ रंग के बोले क्या अच्छा है रंग।
अब यहां चालीस दिन मेंहदी लगाना है मना ॥
जानवर को वक्ते जिबहा देते हैं पानी मगर।
हजरते इन्सान को पानी पिलाना है मना ॥

गजल नं० ६

या खुदा किस बेवफा से आशिकाना हो गया।
जिनके गम में मरते मरते एक जमाना हो गया ॥
या इलाही किस बुते काफिर से पाला पड़ गया।
चश्म भी कहती हमें आंसू बहाना हो गया ॥
पहले मतलब के लिये वो आये कैसे शौक से।
बाद फिर गायब हुये जब दिल दिवाना हो गया ॥
आते थे मिलने को जब नहीं थी किसी से दोस्ती।

हो गई तो बन्द उनका आना जाना हो गया ॥
पहले चालाकी का चकला मारकण्डे जी न थी ।
अब तो मिलने के लिये घर का बहाना हो गया ॥

गजल नं० ७

ऐ दर्द दिल बतादे, कब तक तू कम न होगा ।
हम दम बनेगा किसका, जब मेरा दम न होगा ॥
बरछी सँभाल के मारो, खंजर की चाल सीखो ।
ओछा न वार करना, नहिं सर कलम होगा ॥
तुरबत पै मेरी आये, गैरों को साथ लाये ।
वादे सिवाय वह क्या २ मुझ पर सितम न होगा ॥
यह दम अगर्चे मेरा, जान पै निकले तेरे ।
मरने का मुझको सदमा, तेरी कसम न होगा ॥
फुरकत में तेरी जाना, रोता है एक जमाना ।
वह आदमी न होगा, जिसको यह गम न होगा ॥
नुस्खे हजार लिखिये, हरगिज सफा न होगी ।
एक बार वस्ले जाना, जब तक रकम न होगा ॥
तड़पूँगा याँ ईलाही, कर करके आहो नाले ।
पहलू में हाय मेरे, जब यह सनम न होगा ॥
मत भूल चन्द रोजा, तू जिन्दगी में गाफिल ।
सब होंगे इस जहाँ में, इक तेरा दम न होगा ॥

स्वतन्त्र भारत गजल नं० ८

अहा हा मोहन के मुख से निकला,
स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत।
सचेत होकर सुना सभी ने,
स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत ॥
समीर में नीर में गगन में,
बचन में तन मे हर एक मन में ॥
वही मधुर ध्वनि समा रही है। स्वतन्त्रभा० ॥
हर एक घर मे मची हुई है,
स्वतन्त्रता की विचित्र हल चल।
हर एक बच्चा पुकारता है। स्वतन्त्र भा० ॥
रहा हमेशा स्वतन्त्र भारत
रहेगा फिर भी स्वतन्त्र भारत ॥
दिखाई देता है स्वप्न में भी। स्वतन्त्र भा० ॥
बना के कुटिया स्वतन्त्रता की,
सपूत जेलों में रम रहे हैं।
निकल के देखेंगे वह तपस्वी, स्वतन्त्र भा० ॥
कुमारी हिमगिरी अटक कटक में,
बजेगा डङ्का स्वतन्त्रता का।
कहेंगे तैंतिस करोड़ मिलकर स्वतन्त्र भा० ॥

स्वदेशी गजल नं० ९

स्वदेशी प्रेम जनता में, अगर एक बार हो जावे।
हमारा राज्य भारत में, बिना तलवार हो जावे॥
सुदर्शन चक्र-चर्खे को, अगर सब हाथ में लेलें।
भयानक तोप भी उससे, यहाँ बेकार हो जावे॥
बचावें द्रव्य हम अपना, विदेशों में जो जाने से।
तभी निर्धन हमारा देश, यह धनवान हो जावे॥
विदेशी वस्तु लेने से, जभी हम हाथ धो बैठें।
तभी आधीन यह अपनी, कड़ी सरकार हो जावे॥

गजल नं० १०

ऐ कैस तेरी फुरकत रंगत बदल रही है।
रुक रुक के तेग गम की गर्दन पे चल रही है॥
उठते न बैठते कल, सोते न जागते कल।
बैरिन ये बेकली हां तन में उछल रही है॥
थम थम के अश्क झड़ियां आंखों से यों रवा हैं।
गोया सफेद हंसिन, मोती उगल रही है॥
भूली नहीं हूँ दिलबर, हरदम है याद तेरी।
इस याद ही से कुछ कुछ तबियत बहल रही है॥
जालिम पिता ने रोकी, मक्तब छुड़ादिया है।
ऐ "कैस" तेरी फुरकत, सीना जला रही है॥

गजल नं० ११

इश्क का खन्जर लगा है दिल पे मेरे इन दिनों ।
जख्म की सूरत हय खूं आखों से जारी इनदिनों ॥
बाग में जाती है उस गुलकी सवारी इनदिनों ।
मुँह छिपाये फिरती है वह हुस्न बानू इनदिनों ॥
भोली भाली शक्ल पर दिल मचलता ऐ सनम ।
क्या ही सूरत होगइ है प्यारी प्यारी इन दिनों ॥
देख कर ए नाज़नी कद में मेरी उठती नहीं ।
हम तो मरते हैं मुहब्बत है तुम्हें क्या इनदिनों ॥

गजल नं० १२

मादरे हिन्द तूं अब ऐसे बसर पैदा कर ।
कृष्ण अर्जुन की तरह लख्ते जिगर पैदा कर ॥
तुझको आजाद बनाने में जो कटिबद्ध रहे ।
गांधी और तिलक ऐसे बसर पैदाकर ॥
धर्म को जो कभी नहिं छोड़ा हाथ से अपने ।
राना प्रताप सा फिर शेरे बबर पैदा कर ॥
जो तेरी लाज का रखे हर बख्त दिल में ध्यान ।
लाजपतराय से तू लाखों बसर पैदा कर ॥
तेरी आजादी का पौधा लगाया जिसने ।
दादा भाई से तू दो चार बसर पैदा कर ॥

जो खजाने को तेरे माल से भरना चाहे।
मालवीय जी से तू आराम जिगर पैदा कर॥
देश के खातिर आराम त्यागा जिसने।
मोतीलाल ऐसे नूरे नजर पैदा कर॥
जाके मैदान में जो दुश्मन को दिखाया नीचा।
शिवा जी जैसे तू फिर बीर नजर पैदा कर॥

शहीदोंकी याद नं० १३

सुखदेव, भगतसिंह, राजगुरु आजादीके दीवाने थे।
हँस हँस कर झूले फांसीपर भारत माँ के मसताने थे।
व मरे नहीं हैं जिन्दा हैं व अमर शहीद कहायेंगे।
व प्यारे वतन पे निशार हुए व वीरोंमें मरदाने थे।
ये मरजी उस मालिककी थी सब उसने खेल दिखाये हैं।
था लिखा उन्हें कुर्बान होना फांसीके मुफत बहाने थे।
ब्रिटिशने कहा माफी मांगो शायद जिन्दगानी होजावे।
हँस२ के सबोंने जवाब दिया नहीं हममें दाग लगानेथे
दुख दर्दसे तूने पाला था कुछ काम न हम आये तेरे।
आजाद न मां कर तुमको चले मालिकके यही मनमाने थे

'कमल'

गजल नं० १४

चुन चुन के फुल ले लो, अरमान रह न जाये।
यह हिन्द का बगीचा, गुलदान रह न जाये॥

यह वह चमन नहीं है, लेने से उजड़ जाये।
उल्फत का इसमें कुछ भी, अहसान रह न जाये॥
कर दो जबान बन्दी, जेलों में चाहे भेजो।
मादर पै होना कोई, कुर्बान रह न जाये॥
छल अरु कपट से सारा भारत का माल लेलो।
उसके गुजर का कोई, सामान रह न जाये॥
मारो मसीनगन से, या बोलो मारसल्ला।
ईसामसीह की भी, कुछ आन रह न जाये॥

गजल न० १५

खूने जिगर को पीते हैं, बस गम में तेरे यार।
शहरे चमन में फिरते हैं, बस गम में तेरे यार॥
ना जीते हैं नहिं मरते हैं, बस गम में तेरे यार॥
ऐसी हवा चलाई यमुना मोहे दिखाई।
मैं चुपके २ रोती हूँ, बस गम में तेरे यार॥
मैं गम में तेरे रोती, मुँह आँसुओंसे धोती।
वो कहां गया मेरा मोती, मोती बिना नहीं सोती
रे बसगम तेरे यार॥ खूने०॥

गजल नं० १६

यह राष्ट्र ध्वजा धन मेरा जीवन बलिदान करेंगे।
झण्डा है प्राण हमारा प्राणों से बढ़कर प्यारा॥

तन मन धन इस पै वारा, जीवन कुर्बान करेंगे ॥
सूली पर उछल चढ़ेंगे, बन्धन से नाहिं डरेंगे।
सब कुछ सानन्द सहेंगे, पर झण्डा नहीं तजेंगे ॥
आवो प्यारे झंडाको लहरावें, सुचि राष्ट्र भाव दरसावों
सत्याग्रह समर दिखावें, पर हिंसा नहीं करेंगे ॥

भारत का विपता राग दीपक ताल झूमर नं० १७

गिरलई विपत के गठरिया हो भाई भारत मुलुक में ॥
साले साले कांग्रेस भेले पैंतालिस तो बिति गैले।
तइओ नाहिं भैले सङ्गठनियां हो भाई भारत मु० ॥
संकट विकट आई गैले डगमगाई भारत गैले।
तजि देले नेता अन्न पनिया हो भाई भारत मु० ॥
भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव फांसी परे।
चारो ओरि मचे हा हा करिया हो भाई भारत मु० ॥
काला पानी फाँसी भेल, हिन्दू मोमिन दुनों गेल।
बजड़ परेउ दुनो अकिलीया हो भाई भारत मु० ॥
मोतीलाल, लाजपतराय, गंगाधर बाल तिलक।
छोड़ी गइले बिच धार नइया हो भाई भारत मु० ॥
सुभाष बोस सेन गुप्ता, जेलवा में पड़ले विपता।
लाठी घुसा पड़ले उनका मरिया हो भाई भारत मु० ॥

रण के भेरी बाजी गइले, गाँधी जी हुकुम दिहले।
अहिंसा रूपी गह्ह तलवरिया हो भाई भारत मु० ॥
सत्याग्रह युद्ध छिड़ले, नेता सब जेहल गइले।
ब्रह्मा विष्णु लेहु शिव खबरिया हो भाई भारत मु० ॥
अन्न जल त्यागि देलन, यतिन्द्र दास स्वर्ग गेलन।
रहि गइले नाम निसनिया हो भाई भारत मु० ॥
हिलमिल एक होवो बैर भाव त्यागि देवो।
गांधीजी के मानु सब बचनिया हो भाई भारत मु० ॥
राम रहिम एकै जानू दोनो मिली बिनय ठानू।
भारतका तो मिली काटू पावो बेड़िया हो भाई भा०॥
जाता गेलई ढेकी गेलई गरीब के रोजगार गेलई।
कलवा में पेराई तेल घनिया हो भाई भारत मु० ॥
दूध दधि महंगा भेल, घृत तो सपना भेल।
गउबन पर पड़ले अफतिया हो भाई भारत मु० ॥
गांजा, अफीम, भांग, चरस बिके महंग लागे।
सोना चांदी हो गइले किमतिया हो भाई भारत मु० ॥
घरमे चुहा डन्ड पेले बेटा बेटी भूखल चले।
तइओ नाहिं छोड़े दारु तड़िया हो भाई भारत मु० ॥
बालापन में सादी कइले, ब्रह्मचर्य खोई दिले।
बुढ़वन सब कैलन जुलुमिया हो भाई भारत मु० ॥
नेम धर्म त्यागि दिहले, लोभ पाप ग्रहन कइले।

छाँड़ि दिहले अपनी सब करमिया हो भाइ भारत मु० ॥
हिन्दी के बिसारी देलन विद्या बुद्धि हीन भेलन ।
गिटपिट २ बोलइ अङ्गरेजिया हो भाइ भारत मु० ॥
छत्री सब निछत्री भेलन, सिंघ सिकार भुली गैलन ।
भागि जाले देखि के बिलइया हो भाइ भारत मु० ॥
तेतीस कोटि देवता दिलेन, नाहि जान कहाँ गेलेन ।
कहवाँ गेलन कृष्ण मोर कन्धइआ हो भाइ भारत मु०।
जब जब भारत भीर पड़ले, प्रभु तब अवतार धरले ।
दुष्ट पापी कैलन सब बँधनिया हो भाइ भारत मु० ॥
हे कृष्ण हे गोविन्द, दया करु कृपा सिन्धू ।
भारत के काटू पाव बेड़िया हो भाइ भारत मु० ॥
बार बार बिनती ठान, अंजनि सुत धरु ध्यान ।
त्राहि त्राहि सुनु मोर पुकरिया जो हनुमत भारत मु०॥
देवी दुरगा सुनु पुकार, बिनवत हीं बारम्बार ।
भारत आइ करु रछपलिया हो माता भारत मु० ॥
गाँव गांव चरखा काटू, खदर पेन्ही सुता बाटू ।
साठ क्रोड़ बचिहे रुपइया हो भाइ भारत मु० ॥
हरफे हरफ जोड़ल बात, विनय सुनु तात मात ।
कांग्रेस के राखु सब इजतिया हो भाइ भारत मु० ॥
टुटल फुटल होइहै बात, शुद्ध करहू पढ़हु तात ।
भुलल चुकल करु हमरि मफिया हो भाइ भारत मु०

फलगु तीर गया धाम, स्वर्ग पुरी पित्र धाम।
शिवचरण नाम निसनियाँ हो भाई भारत मुलुक में॥

गांधी बाबा नं० १६

गांधी बाबा ने भारत जगाय दिया है।
हमें चरखे का मन्त्र बताय दिया है॥
शैर--जब से घर २ में चरखेका चलाना छूटा।
बस उसी रोजसे भारतका नसीबा फूटा॥
आके विदेशियों ने खूब खसोटा लूटा।
छूटा धर्म इन्सान का सभी पौरुष टूटा॥
महिमा सबको घरमका समुझा दिया है।
गांधी बाबा ने भारत जगाय दिया है॥
शैर--कौन सा घर था जहाँ चरखे नहीं चलते थे।
लाखो मन सूत इन्हीं चरखेसे निकलतेथे॥
मोटे और महीन कपड़े हर तरहके बनते थे।
शुद्ध मजबूत थे सुख से उन्हें पहनते थे॥
आँख खुलती नहीं थी सुझाय दिया है।
गाँधी बाबा ने भारत जगाय दिया है॥
शैर--ब्याह शादीमें था दहेजमें चरखेका चलन।
नारियाँ हिन्दू मुसलमां सम्झती सगुन॥
नेमसे नित्य वे चरखेको चलाती थी सदा।
अबके मानिन्द नहीं बैठ बिताती थी सदा॥

अबके मानिन्द नहीं बैठ बिताती थी सदा ॥
सुख से जीवन बिताना बताय दिया है।
गांधी बाबा ने भारत जगाय दिया है ॥

गजल नं० १७

सनम फिर दिखादो अदा रात वाली।
बुलादो हमारी कजा रात वाली ॥
न रोको न मानूंगा मैं ले लिये बिन।
वो जख्मे जिगर की दवा रात वाली ॥
दिखा दो मुझे आज दिन में भी अपनी ॥
वो कैसी तुम्हारी हया रात वाली ॥
छिपाये हो क्यों क्या रहेगी हमेशा।
वो जुल्फों की काली बला रात वाली ॥
मैं लेने को तैयार इस वक्त दे दो।
सनम मेरी सारी सजा रात वाली ॥
फकत देदो "शैदा" को बोसा नहीं तो।
मैं कह दूंगा सारी कथा रात वाली ॥

इति।

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता--
आर० पी० कन्धवे, साहुरी पुस्तकालय,
टावर रोड, गया।

'श्री' यन्त्रालय, सत्ताचौतरा, काशी में छपा।